P. R. No.: DL(S)-17/3082/2006-07-08
Regn. No.: DELHIN/2000/2473

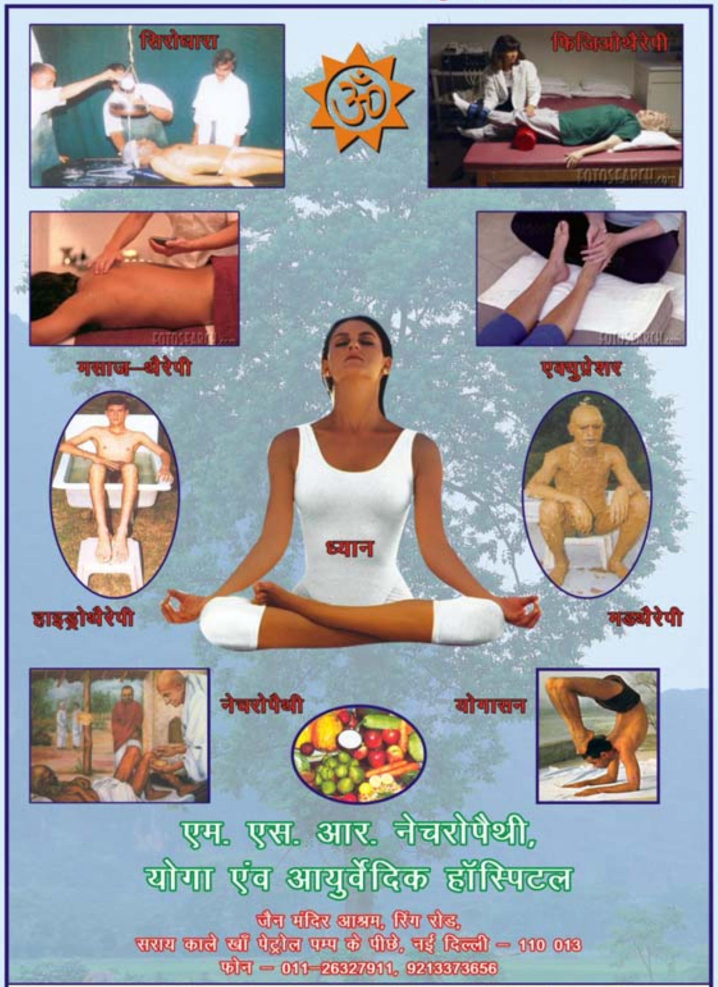

प्रकाशक व मुद्रक : **श्री अरुण तिवारी,** मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.) जैन मंदिर आश्रम, सराय काले खाँ के सामने रिंग रोड़, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–13, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

फरवरी, 2007

मूल्य 5.00 रूपये

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 7 अंक : 02 फरवरी, 2007

: मार्गदर्शन :
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्रीजी

: सम्पादक मंडल :
श्रीमती निर्मला पुगलिया,
श्रीमती मंजु जैन
श्रीमती संगीता बरड़िया एवं श्री बलवन्त जैन

: व्यवस्थापक :
श्री अरूण तिवारी

एक प्रति : 5 रुपये
वार्षिक शुल्क : 60 रुपये
आजीवन शुल्क : 700 रुपये

i`dk'kd
मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने नई दिल्ली–110 013
फोन नं. : 26315530, 26821348
मोबाईल : 9312239709
Website: www.manavmandir.com
E-mail : contact@ manavmandir.com

इस अंक में

01.	आर्ष वाणी	–	5
02.	बोध कथा	–	5
03.	संपादकीय	–	6
04.	गुरूदेव की.........	–	7
05.	सम्बन्धों की.......	–	12
06.	मत–सम्मत	–	14
07.	स्वास्थ्य	–	15
08.	गीतिका	–	17
09.	बाले तारे	–	18
10.	झलकियां	–	25

: ij[kk& lij{kd x.k

- श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका
- श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
- श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
- श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैंकाक
- श्री सुरेश सुरेखा आबड़, शिकागो
- श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
- श्री कृष्ण कुमार सरिता कक्कडिया, लुधियाना
- श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, जयपुर
- श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी, अहमदगढ़ वाले, बरेली
- श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सरदारशहर
- श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
- श्री त्रिलोक चन्द नरपत सिंह दूगड़, लाडनूं
- श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
- श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
- श्री धर्मपाल अंजनारानी ओसवाल, लुधियाना
- श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
- श्रीमती मंगली देवी बुच्चा धर्मपत्नी स्वर्गीय शुभकरण बुच्चा, सूरत
- श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
- श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
- श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
- श्री पुरुषोत्तमदास हरीश कुमार सिंगला, लुधियाना
- श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री बीरबल दास सिंगला, संगरूर
- श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
- श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
- डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी ,न्यूयार्क
- डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
- श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
- श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन
- श्री आलोक ऋतु जैन, ह्युष्टन
- श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
- श्री गिरीश सुधा मेहता, बोस्टन
- श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
- श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
- श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
- डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
- श्री जयचन्द लाल सेठिया, कलकत्ता
- श्री कमलसिंह–विमलसिंह बैद ,लाडनूं
- श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
- श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
- श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
- श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
- डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन ,नोएडा
- श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
- श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
- श्री देवराज सरोजबाला, हिसार
- श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
- श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
- श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
- श्री गुड्डू, संगरूर
- श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
- श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले

आर्ष-वाणी

कोहं माणं च मायं च, लोभं च पाव बडढणं
वमें चत्तारि दोसेउ इच्छंतो हिय मप्पणो।। आगम वाक्य

आत्मा का हित चाहने वाला चार दोषों का वमन कर दे। वे चार दोष है, क्रोध, मान, माया, और लोभ। क्योंकि ये दोष पाप की वृद्धि करने वालों है।

बोध-कथा

मुक्ति का संदेश

एक सौदागर भारत से एक चिड़िया को पिंजरे में बंद कर अपने देश ले गया और उसे मनुष्य की भाषा सिखाई। पुनः भारत में आते समय उसने चिड़िया से पूछा, ''तुम्हारे लिए वहां से क्या लाऊ ?''

चिड़िया बोली, ''तुम मुझे मुक्त कर दो, इससे अधिक कुछ नहीं चाहिए? सौदागर के सहमत न होने पर चिड़िया पुनः बोली, ''वहां जंगल में रहने वाली मेरी बहनों से कह देना कि मैं पिंजरे में कैद हूं।''

सौदागर भारत में आया। उसने जंगल में चिड़ियों को संकेतों से पुकारा। चिड़ियां एकत्रित हुई। सौदागर ने अपनी चिड़िया का संदेश सुना दिया।

एक चिड़िया संदेश सुनते ही फड़फड़ाकर वृक्ष से जमीन पर गिरकर मूर्च्छित हो गयी। सौदागर ने सोचा, यह उसकी निकट संबंधी लगती है। वह अपने देश आया।

चिड़िया ने पूछा, 'भारत से क्या खबर लाये हो ?''

उदासमना सौदागर बोला, 'तुम्हारा संदेश सुनकर तुम्हारी रिश्तेदार एक चिड़िया मूर्च्छित होकर गिर पड़ी।'' चिड़िया भी रिश्तेदार की घटना सुनकर मूर्च्छित हो गयी और धड़ाम से पिंजरे में लुढ़क गयी।

सौदागर ने सोचा, अपनी बहन के दुःखद समाचार को सुनकर यह तो मर गयी। अब यह मेरे क्या काम की है ? इसी ख्याल से सौदागर ने चिड़िया को पिंजरे से बाहर निकालकर रख दिया।

चिड़िया ने तत्क्षण अपने पंख फड़फड़ाये और उड़कर पास के वृक्ष पर बैठ गयी। सौदागर देखता ही रह गया। कुछ सोचकर चिड़िया से पूछा, 'क्या तू दुःखद समाचारों से दुःखित नहीं हुई थी।

चिड़िया बोली, 'न तो वह दुःखित हुई थी और न ही मैं दुःखित हुई हूं। मेरी बहिन ने मुझे मुक्ति का संदेश दिया था। यही कि स्वतंत्रता प्राणों का सौदा मांगती है।''

सम्पादकीय

मौसम का मेवा

कड़कड़ाती सर्दी के बाद वसंत का मौसम आने वाला है। सर्दी भी अपने में अपना महत्व रखती है। इसीलिए जब हम बच्चे थे तब हम सर्दी को बोलते , 'अयि सर्दी माता जल्दी जाओ हम बच्चे कांप रहे हैं। तब हमारे बुजुर्ग कहते बच्चों! घबराओं मत यह भी मौसम का मेवा है। इसी मौसम में धूप सेक का आनंद है। काजू, खिजूर आदि मेवों को खाने का मजा सर्दी के मौसम में ही होता है। और यह सर्दी सब जगह होती भी नहीं है। राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, यू.पी. और भारत की राजधानी देहली में ही सर्दी का आनंद है। इन्हीं दिनों ठंडक में मक्का सेक कर खाते हैं तो बड़ा स्वादिष्ट लगता है। राजस्थान के बाजरे की रोटी खाने का आनंद भी इन्हीं दिनों में होता है। शक्करकन्द भी इन्हीं दिनों अच्छी लगती है।

अब मौसम बदल रहा है। वसंत ऋतु की सबसे बड़ी उपलब्धि है फूलों का खिलना अन्य मौसम में एक तरह का पतझड़ आ जाता है। या सर्दी में अमुक फूल पौधे खिलते हैं तो गर्मी में दूसरी तरह के पेड़ पौधे खिलते हैं। चौमासा तो किसानों के लिए लहलहाती खेती का मौसम है ही, जिस प्रदेश में जो चीज पैदा होती है। जिस जमीन में जिस चीज की पैदाइश है वह वहां भरपूर होती है। बाकी आजकल किस मौसम में क्या वस्तु पैदा होती है, इसकी कोई बंदिश नहीं है। क्योंकि बारहों महीने हर चीज को पैदा किया जाता है। लेकिन एक बात है—पहले जैसे—नेचुरल ढंग से जिस समय जो चीज पैदा होती थी उसका स्वाद और मिठास ही कुछ अलग होता था।अब कृत्रिम ढंग से हर वस्तु हर समय में पैदा हो जाती है। और किसी भी वस्तु को तैयार करने में दिक्कत भी क्या है? अब हाथों से तो कुछ करना नहीं होता। पहले चाहे बागवानी करते या खेती करते हाथों से करते। किसान लोग हल को पकड़े रहते और बैल हल को खींचते थे। अब तो सारे काम मशीनों से होते हैं। खेती ही क्या घरेलू धंधे भी सब मशीनों से होते हैं। क्या कपड़ों की सिलाई। क्या कपड़ों की धुलाई यहां तक कि चाहे जूस निकालना हो। दही बिलौना हो या आटा पीसना हो। सब काम मशीनें करती हैं। पहले की औरतें हाथ से दही बिलौती हाथ से चक्की पर आटा पिसती, हाथ से कपड़े धोती, और भी सारा काम हाथ से करती। उस समय सबके स्वास्थ्य भी ठीक रहते थे। मेहनत और परिश्रम से शरीर की सारी क्रियाएं ठीक रहती हैं। इसी तरह एक जैसा मौसम भी शरीर के लिए ठीक नहीं है। मौसम का परिर्वतन भी होते रहना चाहिए। इसीलिए हमारे बुजुर्गों ने कहा है सर्दी—गर्मी मौसम का मेवा है। इस से घबराना नहीं चाहिए। ○ ***निर्मला पुगलिया***

चमत्कार इन भगवानों के

○ *गुरूदेव की कलम से*

आपका प्रवचन बहुत अच्छा लगा। लेकिन बाबा कोई चमत्कार दिखाइए। दुनिया चमत्कार को नमस्कार करती है, अगर आपने अभी कोई चमत्कार दिखाया तो हम सब आपके शिष्य बन जाएंगे और धर्म का प्रचार करने में जी–जान लगा देंगे।

एक ही सांस में वह सब कह गया। प्रवचन संपन्न होने पर जो हल्की–सी हलचल शुरू हुई थी, वह इस प्रश्न के साथ इंतजार के सन्नाटे में डूब गई। सब कोई उत्तर की प्रतीक्षा में थे।

आज सांय ही हम लुम्बिनी–तौलिहवा (कपिलवस्तु) के बीहड़ एवं ऊंचे नीचे पहाड़ी रास्तों को तय करते हुए भारत–नेपाल के सीमान्त पर स्थित ग्राम बढ़नी श्रीकृष्ण नगर पहुंचे थे। रात्रि में हजारों नेपाली भाई–बहन प्रवचन में उपस्थित हुए। प्रवचन सम्पन्न होते ही एक अधेड़ उम्र के सुशिक्षित–संभ्रांत व्यक्ति ने चमत्कार की बात उठाई।

मैंने कहा–'पहली बात तो मुझे आप सबको यह कहना है कि मुझे शिष्यों की भीड़ चाहिए ही नहीं। अपने ही अन्तश्चेतन के शिष्य बनें, उसी की आवाज पर चलें, आपके जीवन में धर्म अवतरित हो जाएगा। मेरे और आपके धर्म में क्या अंतर है ? धर्म तो एक ही है, सारे जगत के लिए, संसार के हर देश में, इतिहास के हर युग में, मेरे और आपके जैसा अलग अलग कहीं कुछ है ही नहीं, कम से कम धर्म के क्षेत्र में, तो आप अभी जिस धर्म का प्रचार कर रहे हैं, वह अगर मेरा नहीं हैं, तो जो मेरा है उसका आप कभी प्रचार कर पाएंगे, इसमें संदेह है।

रही बात चमत्कारों के प्रदर्शन की। आज सारे आध्यात्मिक जगत में तथाकथित भगवानों द्वारा चमत्कार प्रदर्शन के मायाजाल ने गहरा भ्रम पैदा कर दिया है। कोई शून्य में से राख की विभूति पैदा करने का करिश्मा दिखा रहा है तो कोई माला उत्पन्न करने का। कोई हाथ से छूकर असाध्य रोगों के इलाज का विज्ञापन कर रहा है तो कोई किसी मृत को जिंदा करने का स्वांग रच रहा है।

कोई अजीबो गरीब भविष्यवाणियां करने में लगा है तो कोई विशिष्ट अनुष्ठानों द्वारा अपने अति निकटस्थ भक्तों के संकट–निवारण में। इन सारी स्थितियों ने धर्म के निर्मल आकाश को विभ्रम के कुहासे से भर दिया है। एक कुतूहल, संशय और आतंक का भाव लोक–मानस में पैदा हो गया है। इन अकिंचित्कर जादुई करिश्मों का भाव लोक–मानस में पैदा हो गया है। इन अकिंचित् जादुई करिश्मों के आधार पर न जाने कितनों ने अपने आपको भगवान पद से विभूषित कर दिया है और कितनों ने देश–विदेश में सम्पन्न भक्तों की एक विराट सुरक्षा–वाहिनी खड़ी कर डाली है। सबसे दयनीय स्थिति तो तब सामने आती है जब एक भगवान ही दूसरे भगवान को चुनौती देने लगते हैं और अपने आपको सही भगवान बतलाते हुए दूसरे को महज हाथ की सफाई दिखाने वाले जादूगर करार देते हैं।

ये चमत्कार और अलौकिक प्रदर्शन कितने सच हैं और कितने झूठ, प्रश्न गंभीरता से विचारणीय है। लेकिन इतना स्पष्ट हैं कि धर्म के वास्तविक स्वरूप एवं उसके प्रयोजन से इन बातों का कोई वास्ता ही नहीं है। प्रायः ये चमत्कार धर्म के मूल स्वरूप को ही विकृत कर डालते हैं। ऐसा भी नहीं है कि इनके द्वारा मानवता का कहीं कोई कल्याण किसी भी रूप में हो रहा हो या होने वाला हो। मेरे तो यह स्पष्ट विचार है कि ये चमत्कार मानव के मानसिक विकास के सबसे बड़े अवरोध हैं और धर्म के नाम पर समाज में नपुंसकता, अन्ध ाविश्वास, जड़ता और दंभ के पोषक हैं।

मेरी दृष्टि में धर्म का सबसे बड़ा चमत्कार यही है कि वह मानव–मानव के मध्य प्रेम और सौहार्द का वातावरण बनाए, घृणा और संकीर्णता की दीवारों को तोड़े और सारे जीवों को एक ऐसी प्रेरणा एवं प्रकाश दे कि वे सुख और शांतिपूर्वक जीते हुए अपने में निहित संभावनाओं को निरंतर साकार कर सकें। धर्म का महानतम चमत्कार सम्पूर्ण विश्व–मानवता को एक परिवार में रूपान्तरित करना है, जहां अपने–पराए की भेद रेखा कहीं दिखाई न दे। अगर ऐसा हो सका तो सचमुच ही मानव–जाति के इतिहास में एक महान चमत्कार घटित होगा, जिसके सामने आज भोले–भाले लोंगों को दिखाए जा रहे ये छलपूर्ण करिश्में कुछ भी नहीं रहेंगे। मेरा तो उस महनीय चमत्कार में ही विश्वास है। मानव–जाति का हित भी उसी में है और समाज के लिए धर्म का असली प्रयोजन भी मेरी दृष्टि में यही है।

गुरूडम स्थापित करने का सरल साधन

मुझे नहीं पता, वह व्यक्ति चमत्कार की चकाचौंध से मुक्त हो सका अथवा नहीं। प्रश्न केवल एक व्यक्ति का नहीं है। आए दिन समाचार पत्रों में इन रहस्यमय चमत्कारों के बारे में कुछ–न–कुछ पढ़ने को मिल ही जाता है। यह भारत महान् देश है। कोई न कोई देवी–देवता, पीर–पैगम्बर, पहुंचे हुए महात्मा और चमत्कारी भगवान यहां प्रकट होते ही रहते हैं। भोले–भाले भावुक नर–नारी जो सहस्त्राब्दियों से अपने कंधों पर अंधविश्वासों का सलीब ढ़ोते रहे हैं, चाहे वे शिक्षित हों या अशिक्षित, अपने जीवन के दुःख दर्द का निवारण करने के लिए उनकी कृपा के भिखारी बन दर–दर भटकते रहते हैं। उनमें से कितनों का संकट निवारण होता है। कितनों का नहीं, यह कह पाना मुश्किल है। सफल चमत्कारों की कीर्ति–गाथाएं गाई जाती हैं, असफलता को विस्मृति के गह्वर में फेंक दिया जाता है। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इन के नाम पर न जाने कितने छद्मवेशी अपना गुरूडम स्थापित किए बैठे हैं। एक गिरोह द्वारा किसी को गुरू, पहुंचे हुए महात्मा या भगवान रूप में प्रचार करना, कुछ काल्पनिक चमत्कारी घटनाएं गढ़ लेना और फिर धर्म–भीरू लोगों से पैसा ऐंठना–आज रोजमर्रा का व्यापार बन चुका है। अनेक बार ऐसे पाखंडों की कलई खुल भी चुकी है, फिर भी हमारे लोकमानस में चमत्कार के नाम पर विश्वास इतना गहरा है कि वह हर बार किसी नाम से अपने को ठगाने के लिए आंख मूंदकर प्रस्तुत हो जाता है।

चमत्कार कितने सत्य, कितने असत्य ?

प्रश्न उठता है कि ये सारे चमत्कार और अलौकिक विभूतियां कहां तक सत्य हैं? कहां तक मात्र छलावे हैं? प्रथम तो हमें यहीं समझना होगा कि चमत्कार और विभूतियां हमारी अपनी दी हुई अभिधाएं हैं, हमारे लिए जो असामान्य है, फिर भी प्रत्यक्षतः सामने घटित हो रहा है, उसे चमत्कार व विभूतियां कहते हैं क्योंकि हम उनके कारणभूत प्रकृति के नियमों को नहीं जानते। जो जानते हैं, उन्हें साध चुके हैं, जिनको ये क्षमताएं प्राप्त हो चुकी हैं, उनके लिए ये चमत्कार नहीं है, सहज क्रियाएं हैं। प्रागैतिहासिक लोगों के लिए हमारा आज का वायुयान या टेलीवीजन चमत्कार ही होगा। क्योंकि वे इन चीजों को तथा इनके आधारभूत विज्ञान के नियमों को नहीं जानते। हमारे लिए यह सामान्य बातें हैं, रोजमर्रा हमारे काम में आने वाली चीजें हैं। हम चमत्कार दिखाने के लिए टेलीविजन चालू नहीं करते या हवाई जहाज में यात्रा नहीं करते। उसी

प्रकार वास्तव में विभूति–प्राप्त पुरूष अगर कभी हुएं हैं या अभी हैं या आगे कभी होंगे, तो उनके लिए इन चीजों में चमत्कार या विभूति जैसा कुछ होगा भी नहीं। और उस समय उनका प्रयोग वे करेंगे भी नहीं। ऐसी घटनाएं प्राचीन साहित्य में मिलती हैं तथा अर्वाचीन साहित्य में भी उन पर आज परामनोविज्ञान के क्षेत्र में पूर्वीय एवं पाश्चात्य जगत में अनुसंधान भी हो रहे हैं, ये क्या है, क्यों होती हैं, इस भौतिक विज्ञान में जिस स्तर पर प्रयोग होते रहे हैं, उस स्तर पर अध्यात्म के क्षेत्र में आज प्रयोग बहुत कम मिलते हैं। जो मिलते हैं, वे भी व्यक्तिगत स्तर पर। चमत्कार के नाम पर हाथ की सफाई और बाजीगरी अवश्य मिल रही है, जो वैज्ञानिक प्रयोगों की कसौटी से या तो प्रथमतः ही पलायन कर जाती है या उस पर खरी उतर नहीं पाती। वह प्रारंभ में ही छलावा हैं क्योंकि उसके पीछे लक्ष्य ही यही है कि भोले–भाले लोगों को चमत्कार के नाम पर ठगा जाए, उनकी धर्म–श्रद्धा का शोषण किया जाए, उनके अंधविश्वासों का गलत लाभ उठाया जाए। यह पूरा का पूरा अलग क्षेत्र है उन घटनाओं तथा कार्यों से, जो वास्तव में भौतिक नियमों की हमारी जानकारी के बाहर होते हैं। इन्हें योग एवं साधना के सूत्रग्रंथों में विभूतियां, अथवा ऋद्धियां कहा गया है, धार्मिक क्षेत्र में जितने भी सत्य द्रष्टा इतिहास के हर युग में तथा विश्व के हर राष्ट्र में हुए हैं, उनके जीवन में ऐसी घटनाएं मिलती हैं। लेकिन उन्हें पढ़कर यही लगता है कि उनके पीछे जानबूझकर लोगों को चमत्कृत कर उनकी श्रद्धा का किसी भी रूप में लाभ उठाने की भावना उनके मन में नहीं थी। उनमें किसी प्रकार की असामान्यता का बोध भी नहीं था। ऐसे प्रसंग हजारों की संख्या में विश्व–धर्म के इतिहास में मिलते हैं सबसे यही झलकता है कि कभी अनिवार्य आवश्यकता पड़ी तो क्षमतावान पुरूष ने सहज सामान्य रूप में प्रेम एवं अनासक्तिपूर्वक विभूतियों का प्रयोग किया। स्वंय उसने इन्हें विभूतियां या चमत्कार नहीं माना, सहज क्षमता मानकर ही चलें, इसी कारण उनमें प्रदर्शन की भावना नहीं थी। ईसा–मसीह नाव पर जा रहे थे। नाव यात्रियों से भरी थी। नदी में तूफान आया। नाव डूबने को आई। लोग घबरा गए। कई रोने–पीटने लगे। ईसा ध्यान में डूबे थे। रोने–चिल्लाने पर ध्यान टूटा। बाइबिल कहती है कि उन्होंने तूफान को डांटा और वह किसी चंचल बालक की तरह सहमकर चुप हो गया। लोगों के लिए यह एक चमत्कार था। ईसा–मसीह के लिए तो यह कुछ भी नहीं था। उन्होंने आश्चर्यस्तब्ध लोगों को कहा–विश्वास पैदा करो अपने आप में और परमात्मा में, अगर तुम्हारे पास मटर के दाने जितना भी विश्वास हो और तुम सामने वाले पर्वत को वहां से

उड़कर सागर में गिरने का आदेश दो तो उसे वैसा करना पड़ेगा। तुम्हारे विश्वास में ही कमजोरी हो तो उसका वह क्या करें ? जिन्हें हम चमत्कार एवं विभूतियां कहते हैं, ईसा मसीह के शब्दों में उसका रहस्य यही है। वह संभव है, बहुधा प्रत्यक्ष भी होता है। उससे एकदम अलग ये हाथ की सफाई और बाजीगरी के करिश्मे हैं, जिन्हें दिखाकर कुछ चतुर लोग धर्मप्रेमी एवं अज्ञानी जनता को दिन–रात भरमाते और लूटते हैं।

चमत्कार क्या है ?

जैन ग्रंथों में अतीन्द्रिय घटनाओं एवं उपलब्धियों को लब्धियां कहा गया है, पातंजल योगसूत्रों में विभूति। इन्द्रियातीत स्तर पर साधक को दिव्यरूप, रस, गंध एवं स्पर्श का अनुभव होता है। इन्हें मार्ग की अनुभूतियां ही माना गया है। ये साधना के लक्ष्य नहीं है। साधना में ये बाधक हैं। साधक इनमें फंसकर लक्ष्यच्युत हो जाता है। इन्हें साधना के मार्ग में प्रलोभन या उच्चाटन मानकर साधक को बार–बार इनके प्रति सावधान किया गया है। इन्हें किसी भी साधना–पद्धति में उपादेय नहीं माना गया है। इसलिए योग–साधना की परंपरा ने चमत्कारों के प्रदर्शन का विरोध ही नहीं किया है, अपितु इन्हें साधना की प्रगति में अवरोधक मानकर वर्जित भी किया है। भगवान महावीर, भगवान बुद्ध आदि सभी प्रबुद्धचेता महापुरूषों ने इन सब चमत्कारों पर अपने युग में कड़ा प्रहार किया। क्योंकि वे जानते थे कि ये न तो मानव–जाति के लिए हितकर हैं, न साधक की साधना में सहयोगी ही। उसके विपरीत ये साधक को उसकी साधना से भटकाने वाले हैं, और मानव जाति को भी धर्म के मूल प्रयोजन से दूर ले जाने वाले हैं, शुद्ध धर्म से हटाकर मानव को गुमराह करने वाले हैं।

आज के चमत्कार–संकुल वातावरण में साधना की मूलभूत दृष्टि धर्म का असली प्रयोजन तथा मानव की मूलभूत आस्थाएं शोषण की शिकार न बनें, इस दृष्टि से अध्यात्म की सही दिशा का स्पष्ट होना जरूरी है।

- ***दयालुता से दयालुता और विश्वास से विश्वास का जन्म होता है।***
- ***जो महान है, वह महान पर ही वीरता दिखाता है।***
- ***भिक्षु हो या राजा, जो निष्काम है, वही शोभित होता है।***
- ***अगर हमें आज शांति नसीब नहीं है तो इसका मतलब है कि हम एक दूसरे को भूल चुके है।***

भाई बहन का रिश्ता

○ ***संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री***

मम्मी जब से हमारे घर भाभी आई है भैया मेरे से खिंचे–खिंचे से रहने लगे हैं। शादी से पहले भैया जब भी घर में आते थे मेरे लिए कुछ न कुछ लेकर आते थे। अब तो कुछ लाते हैं सीधे भाभी को सौंप देते हैं। शादी से पहले मेरे बिना उन्होंने कभी खाना भी नहीं खाया। मैं कभी अपनी सहेली के घर से लेट आती तो इंतजार करते रहते। मैं कभी खाना खा के आ जाती तो भैया भी भूखे सो जाते लेकिन अपनी लाडली बहन दिव्या के बिना उन्हें कभी खाना अच्छा नहीं लगता था और अब तो कभी झूठे मन से भी नहीं कहते कि आओ दिव्या! हम साथ बैठकर खाना खाएं। चलो साथ बैठकर खाना न भी खाएं कम–से–कम प्यार से बोलें तो सही। लेकिन वे तो घर आते ही सबको देखा–अनदेखा कर भाभी के कमरे में घुस जाते हैं। जैसे दुनिया से कोई सरोकार ही नहीं हैं।

बेटी दिव्या! तू अभी बच्ची है। तुम्हारे भैया ने नया संसार बसाया है। और तुम्हारी भाभी अपने माता–पिता को छोड़कर एक अजनबी के घर में आई है तो उसका मन बहलाव करने के लिए भैया को अभी अपना ध्यान उधर ही केन्द्रित करना पड़ रहा है। बेटी! भैया भाभी को प्यार करता है तो तुम जलती क्यों हो? तुम्हें तो खुशी होनी चाहिए कि हमारे भाई–भाभी कितना प्यार से रहते हैं।

मम्मी! भैया–भाभी को प्यार करें, इससे मुझे कोई तकलीफ नहीं, लेकिन बहन भी तो भाई पर कुछ हक रखती है। पत्नी, पत्नी की जगह है, बहन बहन की जगह। पत्नी का स्थान कभी बहन नहीं ले सकती तो बहन का स्थान पत्नी भी नहीं ले सकती। लेकिन दिवाकर भैया के लिए तो अलका भाभी के सिवा इस दुनिया में कोई है ही नहीं। बहन, बुआ, मां सबके प्रति भैया उदासीन हो गए हैं।

मुझे लगता है मेरे प्यारे भैया को भाभी ने इतना रूखा और हमारे परिवार से बिमुख बना दिया है कि उनको हमसे नफरत हो गई है। मम्मी आप स्वंय ही सोचो जब भैया की साली आती है तब वे कितना हंस–हंस कर बोलते हैं, उसके लिए कितनी तरह की मिठाइंया लाते हैं, उसे घुमाने ले जाते हैं, फिल्म दिखाते हैं। साली के लिए ऑफिस तक जाना भूल जाते हैं।

भैया जब भाभी की बहन की इतनी इज्जत करते हैं तो भाभी का भी फर्ज बनता है कि भैया की बहनों के साथ प्यार भरा व्यवहार करें। उनको इज्जत और सम्मान दें।

दिव्या! तुम्हारे भैया की अभी नई–नई शादी हुई है। कुछ दिन तक तुम्हारा भाई अपनी पत्नी और ससुराल से आने वालों के प्रति उदार बना रहेगा। थोड़े दिनों

के बाद अपने आप घरवालों के प्रति सामान्य हो जाएगा। फिर तुम्हें अपने भैया से कोई शिकायत नहीं रहेगी।

नहीं मम्मी! भैया बिल्कुल पराए हो गये हैं। अब वे कभी अपने नहीं होंगे। भाभी के इशारों पर नाचने वाले हमारी क्या सुनेंगे?

मम्मी! आप यकीन कीजिए अभी मेरी सहेली शिखा के भैया की शादी हुई है। इतनी पढ़ी–लिखी और खूबसूरत दुल्हन आई है। इतना अनाप–शनाप दहेज मिला है, फिर भी शिखा का भाई अपनी पत्नी के कोई चोचले नहीं करता। प्रत्युत अपनी पत्नी से अपने घरवालों की सेवा करवाता है। सबकी इज्जत करनी सिखाता है। वह जितना ख्याल अपनी नवागन्तुक पत्नी का नहीं रखता उससे ज्यादा अपनी मां, बहन, भाभी का ख्याल रखता है। और एक हमारे भैया हैं जो लगता है भाभी के हाथ का खिलौना बन गए हैं।

मम्मी! और अधिक क्या कहूं अभी भैया अहमदाबाद जाकर आए हैं, नए कपड़ों से भरा सूटकेस सीधे भाभी के कमरे में ले गए। आपको दिखाया तक नहीं। दिव्या अभी मम्मी से भैया की शिकायतें कर ही रही थी कि उसका भाई दिवाकर अपने हाथों में दो साड़ियां लिए आया और उसने उन्हें अपनी मां के आगे रख दिया।

दिवाकर का यह व्यवहार मां को अच्छा नहीं लगा क्योंकि इससे पहले दिवाकर कोई भी चीज लाता था, वह सारी मां के सामने रख देता था। मां ही घर के सब सदस्यों में आए हुए सामान को सभी बहन–भाईयों में बांट देती थी। आज पत्नी के द्वारा नापसंद की हुई दो साड़ियां मां को पकड़ा दीं और बाकी सारा सामान पत्नी को दे दिया। यह बात मां को अपमानजनक लगनी ही थी।

मां ने अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए दिवाकर को दोनों साड़ियां यह कहते हुए वापस लौटा दीं कि यह भी अपनी महारानी को ही सौंप दो।

दिवाकर थोड़ा सहमा और फिर बोला, मम्मी! ये साड़ियां तो मैं विशेष रूप से दिव्या और भाभी के लिए लाया था। प्लीज आप उन दोनों को दे दीजिए न? क्यों भाई! तेरी महारानी की नापसंद की हुई साड़ियां दिव्या और भाभी क्यों पहनेगी। ये तू अपनी अलका को ही दे दे। दिव्या और भाभी के लिए और आ जाएगी। दिव्या और भाभी के लिए लाए थे तो सारी साड़ियां मेरे सामने रख देते। मैं सबको सबकी मनपसंद साड़ियां दे देती। दिवाकर! तुम खुद देख रहे हो कि कि तुम्हारा बड़ा भाई जो कुछ भी लाता है मेरे सामने रख देता है, फिर तुम यह कहां से सीखे कि जो लाए अपने कमरे में ले गए। बेटे, संयुक्त परिवार में यह सब शोभा नहीं देता।

मम्मी! मैं अक्सर देखता हूं। हम लोग जो भी अच्छी चीज लाते हैं आप बहिनों को दे देती हैं। बहुएं तरसती रह जाती हैं, बहुओं की भावना का ख्याल आपनहीं रखेंगी तो हमको रखना पड़ेगा। आपकी नजर में बहू–बेटी एक जैसी होनी चाहिए, लेकिन बेटियों के कोई तकलीफ है तो तुरंत डाक्टर आएगा। बहूएं दर्द से चीखती हैं तो आपको लगता है बहाने बना रही हैं। बहनों के हाथ से कोई नुकसान हो जाए तो आप उसको औरों की नजरों से बचाने की कोशिश करती हैं और बहुओं से छोटा–मोटा भी नुकसान हो जाए तो तिल का ताड़ बन जाता है। बहनों को कोई चीज चाहिए तो उसी वक्त हाजिर और बहुओं की जरूरतों पर ध्यान ही नहीं दिया जाता, फिर बेटे बहुओं का पक्ष नहीं लेंगे तो क्या करेंगे।

बहू और बेटी के बीच होने वाला मां का यही पक्षपात बेटों को व्रिदोही बना देता है। बहुएं अपने पतियों को परिवार से विमुख कर देती हैं और भाई बहन के मधुर संबंधों में दरार पड़ जाती है। बेटे की बातें सुनकर मां की आंखे खुली तो सही पर बहुत देर से खुली।

मत-सम्मत

यह मेरे सौभाग्य का उदय था जब आचार्य श्री रुपचन्द्रजी महाराज की परम भक्त रीटा जैन ने 'रुपरेखा' पढ़ने के लिए मुझे दी। जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि यह पत्रिका हमारा आदर्श बन सकती है। लगा एक झरने के पास खड़े है, प्रेरणा और नीति की बूंदे हम पर पड़ कर शीतलता प्रदान कर रही हैं।

'समझना है मंत्रों की सार्थकता सें' के माध्यम से गुरुदेव ने ध्यान-विधि से संबंधित बहुत से जिज्ञासा को शांत किया। महाराज श्री की कलम से निकले अमृत वचन जीवन को नई दिशा देने का सामर्थ्य रखते है। लेकिन दोष हम अल्पज्ञ प्राणियों का है। जब पात्र में ही छेद हो तो वह कुछ भी संचित नहीं कर पाता है। इस आशा से की उनके ज्ञान का प्रकाश हमारे जीवन को सदा आलोकित करता रहेगा मैं गुरुदेव के चरणों में श्रद्धा की पुष्पांजलि अर्पित करती हूं।

○सीमा जैन

सफेद ब्रेड व मैदे के खाद्य (फास्ट फूॅड) –स्वास्थ्य के लिए हानिकारक

○ डॉ. पीताम्बर

सदियों तक लोग हाथ की चक्की का पिसा आटा व उसकी बनी रोटी खाते रहे। रोटी का सवाल है, चने की रोटी, दाल रोटी का सवाल है, रोटी को मोहताज हैं जैसी कहावतें प्रचलित रही हैं। अनाज व गेहूं की रोटी का आटा खुरदरा परंतु स्टार्च, विटामिन व खनिज लवणों जैसे पोषक तत्वों से भरपूर होता था, परंतु 19वीं सदी की शुरूआत में आयी हंगरी की रोलर मिलों ने रोटी के रूप व गुणवत्ता को बिल्कुल बदल दिया। इन मशीनों के द्वारा गेहूं का चोकर (छिलका) निकाल दिया जाता था, बचता था गेहूं में दाने का अंदर का सफेद भाग, जिससे यह रोटी साफ, सफेद व आंखों को मोहक मालूम होती थी। ब्रेड का यह नया रूप देखते–देखते दुनियां में छा गया। सफेद ब्रेड से लोगों का मोह तब भंग हुआ जब तकरीबन 50 साल पहले विटामिनों के बारे में खोज से पता चला कि सफेद ब्रेड विटामिनों व खनिज लवणों की दृष्टि से बहुत गरीब हैं। हावर्ड स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ द्वारा 65,000 औरतों पर 6 वर्षीय अनुसंधान के अनुसार जिन औरतों के भोजन में मैदे से बनी ब्रेड व अन्य खाद्य शामिल थे उन औरतों को गेहूं के संपूर्ण तत्वों वाली रोटी तथा अन्य खाद्यों को लेने वाली औरतों की अपेक्षा टाइप 2 डायबिटीज होने का खतरा ढ़ाई गुना ज्यादा था। दरअसल कम फाइबर व ज्यादा कार्बोज वाला भोजन, हमारे शरीर में शर्करा जैसा काम कर जल्दी पचकर रक्त शर्करा स्तर को बढ़ा देता है। फाइबर की कमी डायबिटीज ही नहीं हृदय रोग, कैंसर तथा पाचन संस्थान की गंभीर बीमारियों को पैदा कर सकती है। पंद्रह शोधों का निष्कर्ष कहता है कि अनाज के संपूर्ण तत्व न ग्रहण करने पर पेट व बड़ी आंत का कैंसर होने का भारी जोखिम होता है। स्तन कैंसर का एक कारण फाइबर रहित भोजन करना है। अनाज के संपूर्ण तत्व बीमारियों के खिलाफ सुरक्षा कवच बनाते हैं। सफेद ब्रेड में उनकी कमी पाई जाती है। 1998 में यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो ने 16 वयस्क मरीजों के अध्ययन में पाया कि नर्म मुलायम सफेद ब्रेड ब्लड शुगर के स्तर को काफी बढ़ा देती है। जबकि साबुत गेहूं ब्लड शुगर के स्तर को कम प्रभावित करता है। अतः भोजन के चोकरदार आटे की रोटी ही खाई जाये। यदि अनाज को पिसवाने का समय न हो तो भी बाजार में उपलब्ध चोकर वाले आटे को ही लिया जाये अथवा चक्की

वालों से अतिरिक्त चोकर लेकर उसे छानकर मिला दिया जाये। चोकर को भूनकर रखने से जल्दी खराब नहीं होता। इसे सब्जी, गेहूं, चावल के साथ आसानी से मिलाया जा सकता है। इससे कब्ज की समस्या से भी हमेशा के लिए छुट्टी मिल जाती है। यदि ब्रेड खानी ही पड़े तो ब्राउन ब्रेड जो समूचे गेहूं की रोटी व सफेद ब्रेड के बीच की कड़ी है, वो ली जाये। इसमें गेहूं का चोकर, छिलका आदि की पूरी मात्रा न सही थोड़ी मात्रा होती है। बाजार में इसे व्हील व्हीट रिच ब्रेड कहते हैं। इसमें विटामिन, खनिज लवण भी अलग से मिलाये जाते हैं। वैसे कैलॉरी की दृष्टि से एक ब्रेड का पीस एक रोटी के बराबर कैलॉरी देता है। प्रायः इससे पेट भी नहीं भरता और अतिरिक्त कैलॉरियां शरीर में पहुंकर मोटापे की समस्या को जन्म देती हैं।

इसी प्रकार मैदे में मीठा मिलने से एक पीस केक व पेस्ट्री भी 3–4 रोटियोंके बराबर कैलॉरी देती है।

सफेद ब्रेड को ज्यादा नरम, स्वादिष्ट व अधिक समय तक ताजा रखने के लिए इसमें अनेक रसायन जैसे पाली पैक्सीएथलीन, मोनो स्टीयरेट, अमोनियम सल्फेट, प्रोपियोनिक एसिड, नाइट्रोजन, क्लोराइड, क्लोरीन डायआक्साइड, जैसे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक रसायनों का प्रयोग किया जाता है। न्यूयार्क में टाइम्स यूनियन नामक अखबार के अनुसार वैज्ञानिकों ने ब्रेड की रसायनिक जांच में निम्न रसायनों की उपस्थिति को दर्शाया है।

उक्त अनेक रसायन स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है, अतः ब्रेड खाएं तो स्थानीय बेकरी की, ताजा आटे की बनी ब्राउन ब्रेड ही खायें, जो विश्वसनीय दुकानदार के पास उपलब्ध हो। बाहर की या जो ज्यादा समय तक न खराब हो ऐसी ब्रेड में निश्चित ही रसायन मिले होते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए धीमे जहर का काम करते हैं। यह ब्रेड कब्ज, बवासीर के साथ–साथ रक्त की अम्लीयता को बढ़ा देती है जिससे विभिन्न रोगों की नींव पड़ती है।

फास्ट फूड

आज आधुनिक युग की बढ़ती रफ्तार व भाग दौड़ वाले जीवन में जहां समय की कमी का रोना रोया जाता है, सफेद ब्रेड व मैदे से बने जंक फूड का प्रयोग बहुत अधिक हो चुका है। रेडी टू ईट फूड कॉर्नर व रेस्टोरेंट आज शहर व कस्बों के कोने–कोने में पांव पसार चुके हैं, जहां बच्चों, युवाओं व कामकाजी स्त्री–पुरूषों की भारी भीड़ देखी जा सकती है। इन जंक फूड्स में न केवल कैलॉरी अधिक मिलती है परंतु यह खाद्य प्रोटीन, विटामिन, खनिज–लवण, रेशा

आदि से वंचित हैं, जिससे मोटापा बढ़ने के साथ–साथ अनेक बीमारियां शुरू हो जाती है। आल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईस के डॉ.रामचंद्रन ने सर्वे के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि जो लोग फास्ट फूड के शौकीन हैं, उनमें से अधिकांश विटामिनजन्य रोगों जैसे एनिमिया, नेत्र रोग, अस्थिरोग, दंत रोग प्रमुख है। इसके अलावा फाइबर की कमी से कब्ज, पेचिश, अल्सर, आंत का कैंसर, बवासीर, एपिडिसाइटिस, हर्निया, पथरी जैसे रोगों का आरंभ हो जाता है। फास्ट फूड में कार्बोज, शक्कर और नमक ज्यादा मात्रा में होता है लिहाजा इसके सेवन करने से डायबिटीज, हाई ब्लडप्रेशर, ह्रदयरोग, हड्डियों की कमजोरी जैसे रोग उत्पन्न हो सकते हैं। फास्ट फूड के कारण शरीर में ग्लूकोज तथा सोडियम आदि का संतुलन बिगड़ने से एड्रिनलिन हारमोन के स्त्राव में वृद्धि हो जाती है जिससे खतरा बढ़ जाता है।

गीतिका

ईर्ष्या की अग्नि वुझाते चलो, प्रेम की ज्योति जलाते चलो,
राह में कांटे विखरे पड़े, तुम कोमल फूल बिछाते चलो।

इस जीवन की सुंदर घडिया, व्यर्थ कभी ना खोना,
जोड़ो धर्म से मनकी कडिया, प्रेम दीप से संजोना
पापों को हल्का बनाते चलो

जीवन थोड़ा पता नहीं कब, टूटे सांस की माला
अपने कारण किसके दिल में, पड़े न घाव और छाला
ईर्ष्या दुर्गण मिटाते चलो।

○ साध्वी मंजु श्री

❑❑❑

मासिक राशि भविष्यफल, फरवरी–2007

डॉ. एन. पी. मित्तल, पलवल

मेषः–मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार–व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अवरोधों के चलते आय देने वाला है। किन्तु व्यय भी विशेष रूप से होगा। जिससे मानसिक चिन्ता बनी रहेगी। माह के उत्तरार्ध में व्ययाधिक्य होने की संभावना है। छोटी बड़ी यात्राएं होंगी जिनसे अधिक लाभ की आशा नहीं की जा सकती। शत्रु सिर उठाएंगे किन्तु नुकसान नहीं पहुंचा पाएंगे। अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। समाज में मान सम्मान बना रहेगा।

वृष–वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार–व्यवसाय की दृष्टि से यह माह संघर्ष पूर्ण हालातों के चलते लाभ देने वाला है। माह का उत्तरार्ध, पूर्वार्ध की अपेक्षा अधिक सुदृढ़ स्थिति लिये हुए है। इस समय भी परिश्रम की अत्यधिक आवश्यकता रहेगी। अपने गुस्से पर काबू रखें अन्यथा कोई अनहोनी घटनाघट सकती है। यात्राओं में सावधानी बरतें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

मिथुन–मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार–व्यवसाय की दृष्टि से यह माह मिश्रित फल देने वाला है। हां कार्य संबंधी नई योजनाएं बन सकती हैं। अपने स्वभाव में उग्रता न आने दें अन्यथा परिवार में सामन्जस्य बनाना मुश्किल हो जाएगा। कुछ बड़े लोगों से मुलाकात आप के काम आयेगी। आप अपने भूमि भवन का विक्रय किसी दबाव में आकर न करें।

कर्क–कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार–व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्ध में उत्तरार्ध की अपेक्षा कम अच्छा है। अपने बिना सोचे विचारे किए गये कार्यों के कारण अपमान सहना पड़ सकता है। परिवार में सामन्जस्य बिठाना एक टेढ़ी खीर होगी। अपनी वाणी पर काबू रखना होगा। अपने स्वास्थ्य के प्रति विशेष रूप से सचेत रहें।

सिंह–सिंह राशि के जातकों के लिये व्यापार–व्यवसाय की दृष्टि से यह माह संघर्ष तथा अवरोधों के चलते निर्वाह योग्य धन दिलाने वाला है। अच्छा होगा कि आवश्यक निर्णयों में अपने जीवन साथी से विचार किया जाए। ऋण के लेन–देन में सतर्कता बरतें। नौकरी पेशा जातकों के लिये इस माह का उत्तरार्ध अच्छा है।

कन्या–कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार–व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आय कम और व्यय अधिक कराने वाला है। यदि किसी का कार्य साझेदारी का है, उसमें कुछ अधिक लाभ की उम्मीद की जा सकती है। अपनी माता के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। जो कन्या राशि के जातक अभी तक अविवाहित हैं, उनके विवाह का प्रस्ताव आ सकता है।

तुला—तुला राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार—व्यवसाय की दृष्टि से अवरोधों के चलते धन लाभ के मार्ग प्रशस्त करेगा किन्तु संघर्ष अधिक करना पड़ेगा। कुछ जातकों को आकस्मिक धन की प्राप्ति हो सकती है। कुछ जातकों के घर में कोई मांगलिक कार्य संभावित है। अपने माता—पिता के स्वास्थ्य का विशेष तौर पर ध्यान रखें। परिवारजनों में सामन्जस्य बनाए रखना होगा।

वृश्चिक—वृश्चिक राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार—व्यवसाय की दृष्टि से कुल मिलाकर शुभ फल दायक है। शत्रु सिर उठाएंगे, परंतु आपसे पराजित ही होंगे। वे अपने मनसूबे पूरे करने में नाकामयाब होंगे। कुछ जातक कोर्ट—कचहरी में लटके हुए केसों को सुलझाने में सफलता प्राप्त करेंगे। जीवन साथी से संबंधों में मधुरता बनी रहेगी पर उसके स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। समाज में मान—सम्मान बना रहेगा।

धनु—धनु राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार—व्यवसाय की दृष्टि से पूर्वार्ध की अपेक्षा उत्तरार्ध अच्छा रहेगा। पूर्वार्ध में रूके हुए कार्य पूरा होने की आशा बंधेगी तो उत्तरार्ध में वे कार्य पूरे होंगे। भूमि—भवन के क्रय विक्रय में लाभ की आशा की जा सकती है। छोटी बड़ी यात्राएं होंगी जिनसे वांछित फल मिलेगा। जीवनसाथी के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। यदि कोई आपसी समस्या हो तो थोड़ा नरमी बरतते हुए समय निकालें।

मकर—मकर राशि के जातकों के लिये इस माह व्यापार—व्यवसाय की दृष्टि से धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। पूर्वार्ध की अपेक्षा उत्तरार्ध अधिक शुभ फल दायक है। भूमि भवन के क्रय विक्रय का प्रसंग आ सकता है जिससे लाभ की आशा है। सवारी के क्रय विक्रय का भी योग है। इन सभी प्रसंगों में तथा परिवार में सामन्जस्य बिठाने में वाणी पर नियन्त्रण अपेक्षित रहेगा। नौकरी पेशा जातकों को अनायास कुछ मिलने वाला नहीं है, उसके लिये प्रयास करना होगा।

कुंभ—कुंभ राशि के जातकों के लिये व्यापार—व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अधिक दौड़ धूप करके घनागम कराने वाला है। साझेदारी में कार्य करने वालों के लिये यह माह अपेक्षाकृत शुभ फल दायक है। कुछ जातक सवारी आदि से लाभ अर्जित करेंगे। दाम्पत्य जीवन में सामन्जस्य बना रहेगा। समाज में मान इज्जत बनी रहेगी।

मीन—मीन राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार—व्यवसाय की दृष्टि से निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति कराने वाला है। पूर्वार्ध की अपेक्षा उत्तरार्ध अपेक्षाकृत शुभफल दायक है। कुछ जातक किसी घरेलू ठाठबार के लिए वस्तुओं की खरीदारी करेंगे। किसी न किसी रूप में इस माह इन जातकों का व्ययाधिक्य भी होगा। इन जातकों को वात व्याधि आदि कष्टों का सामना करना पड़ सकता है, सचेत रहें।

इति शुभम्!

राजधानी—समाचार

युग पुरूष, परम पूज्य गुरूदेव आचार्य श्री रूपचन्द्र जी महाराज। परम पूज्या महान विदुषी संघ प्रवर्तिनी साध्वी श्री मंजुला श्री जी महाराज, अपने धर्म परिवार के साथ सानन्द विराजमान हैं। धर्म की प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। मानव मंदिर केन्द्र में देश विदेश से दर्शनार्थियों का आवागमन बराबर बना रहता है। समय समय पर हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, यू.पी. बंगाल, बिहार, गुजरात, आसाम, नेपाल आदि राज्यों से भक्तजन अपने अपने क्षेत्र में पधारने की प्रार्थनाएं करते रहते हैं। यहां के सेवाकार्यों को देखते हुए ही पूज्यवर का बाहर पधारने का कार्यक्रम निर्धारित किया जाता है।

पूज्यवर की बेंगलूर-यात्रा

करीब अड़तीस वर्षों बाद इस बार पूज्यवर की बेंगलूर यात्रा का प्रसंग बना। इसमें प्रमुख निमित्त World Council of religious leaders संस्था द्वारा सर्व—धर्म सभा का आयोजन था। यद्यपि सर्दी—कोहरे के कारण हवाई जहाज की उड़ानों में काफी विघ्न—बाधाएं थीं, फिर भी इस सर्व—धर्म सभा में करीब इग्यारह बारह धर्म—संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे। Spicetelecom के प्रांगण में सर्व—धर्म सभा को संबोधित करते हुए पूज्य गुरूदेव ने कहा विभिन्न धर्म—गुरूओं का एक मंच पर इकट्ठा होना अपने में एक प्रभावी संदेश है। आज से कुछ वर्षों पहले यह मात्र एक कल्पना थी। आज विभिन्न संप्रदायों के अग्रणी न केवल एक मंच पर आने लगे है, बल्कि उनके संदेश में, एक—दूसरे को समझने/समझाने की मनः स्थिति बनी है धर्म जगत के उज्जवल भविष्य का यह शुभ संकेत है। सभा को हिंदू धर्म, क्रिश्चियन, इस्लाम, बौद्ध, यहूदी, बहाई, सिक्ख, ब्रम्हाकुमारी, Art of living के प्रतिनिधियों ने भी संबोधित किया। संस्था के अध्यक्ष श्री बी.के मोदी ने सबके प्रति अपना आभार प्रकट किया।

पूज्यवर का पांच दिवसीय प्रवास हनुमंतनगर, जैन भवन में रहा। रविवार का विशेष प्रवचन रहा जिसमें समाज ने बड़ी संख्या में पूरे उत्साह से भाग लिया। श्री माणक अभिनन्दन सिंघी ने पूज्यवर के प्रवास को सफल सार्थक बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। समाज के अग्रणी नेताश्री मनोहर भारती ने अपने वक्तव्य में अड़तीस वर्ष पुरारी स्मृतियों को उकेरते हुए बार—बार बेंगलूर पदार्पण का निवेदन किया। बेंगलूर जैन समाज में विचारों का काफी खुलापन नजर आया। समाज के प्रमुख नेता श्री धेवरचन्दजी सिंघवी, श्री शांतिलालजी लोढ़ा, श्री शांतिलालजी भंडारी व श्री भंसाली परिवार आदि ने खुले दिल से पूज्य गुरूदेव के विचारों को पूरा बहुमान दिया। श्री राजेश सेठिया, श्री संदीप बरडिया,

श्री तेजप्रकाश जैन, श्रीमती लता बोथरा, श्री छगनजी नाहटा, श्री कर्ण डोसी आदि ने इस अवसर पर पूरा उत्साह दिखाया। पूज्यवर के साथ श्रद्धा–भाव से जुड़े श्री सुभाषजी प्रियंवदा जी तिवारी तथा उनके पुत्र असीम तथा पुत्री सोनल के दिल में खुशियां समा नहीं रही थी। कुल मिलाकर यह कहने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि पूज्यवर की बैंगलूर यात्रा आशातीत सफल रही। युवावस्था तथा समाज में पहली बार काम पड़ने के बावजूद अभिनन्दन सिंघी ने प्रवास–व्यवस्था को सफल अंजाम दिया। इस यात्रा में पूज्यवर की भगवान बाहुबलि की तीर्थ–यात्रा भी उल्लेखनीय रही है। इसके साथ ही श्री कृष्णगिरि में श्री बसंत गुरूजी द्वारा नव–निर्मित श्री पद्मावती तीर्थ–यात्रा भी सुखद रही। श्री बसंतगुरूजी मां पद्मावती के अनन्य भक्त हैं। कृष्णगिरि तीर्थ का जिस तेजी से विकास हो रहा है, वह आश्चर्यजनक है। सात–दिवसीय यात्रा संपन्न करके आचार्यवर 3 जनवरी को वापस जैन आश्रम, नई दिल्ली पधारे। पूज्यवर की इस सहज यात्रा से आगे के लिए बेंगलोर में एक अच्छी भूमिका का निर्माण हो गया है, यह निस्संकोच कहा जा सकता है।

संवेदना-समाचार

मौत एक शाश्वत सत्य है। इसका अपवाद कोई भी नहीं है। क्या अमीर क्या गरीब। क्या राजा क्या रंक सब को इसका शिकार होना पड़ता है।

अभी अभी कलकत्ता में श्रीमती भंवरी देवी सिंघी का निधन हो गया। आाप संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी की संसार पक्षीय बुआ की लड़की बहिन थी। इन वर्षों में आप काफी बिमार थीं। आपके दो लड़के भाई प्रमोद और उम्मेद हैं। बहू बेटों ने खुब अच्छी सेवा की। आपके बेटी थी ही नहीं। आप बहूओं को ही बेटी बेटियां मानती थीं। और असल में देखा जाय तो बहूएं ही घर में रहती हैं। सुख दुःख में हिस्सा बांटती है। बेटी तो पराया धन हैं। शादी के बाद अपने ससुराल चली जाती हैं।

भंवरी देवी के महाअसाता वेदनीय कर्म का उदय था। जिसके कारण ऐसी असाध्य बीमारी लगी। फिर भी आपने समताभाव से सब कुछ सहन किया। साध्वी मंजुलाश्री जी ने आपके परिवार को विशेषरुप से प्रेरणा दी है। भंवरी बहिन के निधन पर शोकाकुल न होकर उनकी आत्मा की सद्गति की कामना करें। जिससे उनकी आत्मा को शांति मिले। दोनों भाई श्री नथमल पारख और नौरतन पारख तथा दोनों बेटे प्रमोद तथा उम्मेद सिंघी को विशेष रुप से कहना है। जैन संगम और मानव मंदिर मिशन आपके परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा की सद्गति की कामना करते हैं।

मानव मंदिर का रजत-जयंती-वर्ष समारोह

मानव मंदिर मिशन का रजत जयंती– वर्ष समारोह का पहला चरण 28 जनवरी, 2007, दिन रविवार को जैन आश्रम, नई दिल्ली में पूज्य गुरूदेव आचार्य रूपचन्द्र जी तथा पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी श्री मंजुला श्री जी के सान्निध्य में अत्यंत आनन्द और उल्लास पूर्णवातावरण में सम्पन्न हुआ इस अवसर पर विशाल जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए पूज्य आचार्यश्री जी ने कहा बचपन से ही मैं धर्म क्षेत्र में आ गया था। सभी परम्पराओं के धर्मग्रन्थों के स्वाध्याय का अवसर मिला इस स्वाध्याय का निचोड़ यह था कि सभी महापुरूषों का सन्देश मानव समाज के लिए ही है। उस स्थिति में प्रश्न यह होता है। विभिन्न धर्म सम्प्रदायों मे आपसी टकराव क्यों है। उत्तर भी साफ है टकराव का कारण धर्म नही पंथवाद और सम्प्रदायवाद है। धर्म की बुनियाद अहिंसा और प्रेम है। पंथ की बुनियाद में हिंसा और नफरत है। आदमी आत्म अभ्युदय और मानसिक शांति के लिए धर्म के निकट आता है किन्तु अक्सर उसके हाथ में पंथ और सम्प्रदाय आ जाता है। वह सत्य का अनुभव चहता है किन्तु उसके हाथ में कुछ मान्यताएं और परम्पराएं आ जाती है वह रोशनी पाना चाहता है किन्तु उसके हाथ में सिर्फ माटी के दीये और बुझी हुई मशालें आ जाती हैं। परिणामतः पन्थों सम्प्रदायों, मान्यता–परम्पराओं को पकड़ वह धर्म और सत्य के ही खिलाफ खड़ा हो जाता है धर्म नेताओं को अपने जय–जयकार के नारों के लिए भीड़ तो मिल जाती है किन्तु प्रश्न यह है मानव समाज को इससे क्या मिलता है।

पूज्य वर ने आगे कहा मन में उठने वाले इसी आन्दोलन में से आज से 25 वर्ष पूर्व दिसम्बर 1981 में राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगरी जयपुर में मानव मंदिर की अवधारणा प्रगट हुई इसका मुख्य उद्देश्य यही है हम पंथ से नहीं धर्म से जुड़े। मान्यताओं/परम्पराओं से नहीं, सत्य से जुड़े। माटी से नहीं रोशनी से जुड़े। इसलिए हमने एक संघ या पंथ के रूप में नहीं, किन्तु एक मिशन का रूप दिया। एक ऐसा मिशन जिसमें अहिंसा–प्रेम, साधना और सेवा को प्रमुखता दी जाये। किसी पूजा अनुष्ठान और क्रिया काण्ड को नहीं। यही कारण है आज यह विशाल जन समुदाय जो हमारे समक्ष है वह किसी पन्थ विशेष के अनुयायी के रूप में नहीं, बल्कि प्रेम और सेवा भाव समर्थन देने के लिए उपस्थित है। मुझे पूरा विश्वास है आप सबके प्रेम और सहयोग से साधना और सेवा को समर्पित यह मानव मंदिर मिशन पूरे विस्तार से देश–विदेश में अहिंसा, प्रेम और सेवा–भावना का प्रभावी वातावरण बनाने में सफल होगा।

मुख्य अतिथि के रूप में केंन्द्रिय वित्त राज्य मंत्री श्री पवन जी बसंल ने कहा–रजत–जयंती–वर्ष समारोह के निमित्त से पूज्य मूनिवर के सान्निध्य में आने का मुझे अवसर मिला, यह मेरे लिए सौभाग्य की घड़ी है। आपके मार्ग–दशर्न

में यह संस्था जो मानव सेवा का कार्य कर रही है, यह अभिनन्दनीय है। मानव–सेवा से बढ़ कर कोई धर्म नहीं हो सकता। सेवा का दीप घर–घर में जलाया जाये तो बुराई का अन्धेरा स्वयं दूर हो जायेगा। इससे पूर्व श्री बंसल जी ने ध्यान–मंदिर हाल में चित्र दीर्घा का लोकार्पण किया, जिसमे पूज्यवर के देश–विदेश के महत्पूर्ण कार्यक्रमों का परिचय मिलता है। उल्लेखनिय है दिल्ली में मानव मंदिर केंद्र को मिले भू–खंड में श्री बंसल जी का विशेष योग–दान रहा है। इतनी ही नहीं, इस आश्रम की आधार–शिला आपके हाथ से ही रखी गयी थी। पूरे समाज में मम्मी सम्बोधन से लोकप्रिय श्रीमती ताजदार बाबर ने कहा–मैं इस मंदिर को अपना इसलिए मानती हूं कि यहां मानव–सेवा ही खुदा की इबादत है। भगवान की पूजा आपको हर धर्म–स्थान में मिलती है। किन्तु सेवा–कार्यो द्वारा मानव की पूजा आपको यहां मिलती है। इन छोटे–छोटे बेसहारा बच्चों के चहरों पर आई मुस्कान से बढ़कर प्रभु–पूजा क्या हो सकती है। यहां सब कुछ देखकर गुरूजी तथा साध्वी–समुदाय से दिल से जुड़ गई हूं।

पूज्य आचार्यवर के मंगल मंत्रों के साथ समारोह का शुभारंभ हुआ। श्री मुकेश जैन भोगल तथा धर्मपाल गोयल फरीदाबाद ने घ्वजारोहण किया। श्रीमती मंजुबाई जैन नोएडा तथा श्रीमती स्वराज एरन सुनाम पंजाब के हाथों दीप–प्रज्ज्वलन हुआ। रूपरेखा पत्रिका की संपादीका श्रीमती निर्मला पूगलिया ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में मानव मंदिर मिशन की पच्चीस वर्षों की परिस्थितियों पर प्रकाश डाला। आश्रम का होनहार बालक साधक सौरभ ने हारमोनियम–वादन के साथ गुरू–महिमा का गान किया। समूह–गीत आश्रम के सभी छात्र–छात्राओं ने प्रस्तुत किया। साध्वी समता जी ने मानव–मंदिर द्वारा संचालित प्रवृत्तियों की जानकारी दी। इस समारोह का मुख्य आकर्षण अन्तर्राष्ट्रीय कलाकार श्री राजेन्द्र जैन द्वारा भक्ति–संगीत की प्रस्तुति थी। भजनों की हृदय–भावनाओं की धारा में पूरे जन–समुदाय को बहा देना श्री राजेन्द्र जी की अपनी विलक्षण प्रतिभा है। प्रभावशाली हाव–भावों के साथ भजन प्रस्तुति के समय लोगों के हाथों में बंधी घड़ियों की सूईयां ठहर जाती हैं। भजनों के उपसंहार में पूज्यगुरूदेव के प्रति अपनी असीम श्रद्धा प्रकट करते हुए श्री राजेन्द्र ने मिशन के सेवा–कार्यों को मजबूती प्रदान करने के लिए समाज से आहवाहन किया। इस आकास्मिक आहवाहन को अधिमान देते हुए श्री नवल सिंह (स्वीडन), श्री माधव जैन (न्यूजर्सी), श्री मनोहर लाल अग्रवाल–दिल्ली, श्री सजनी देवी भरतीया–दिल्ली, श्री शुभ करण दूगड़ (नेपाल), श्री गुलाब चन्द्र बरड़िया–जयपुर, स्वर्गीय प्रेम चन्द्र के

सुपुत्रों द्वारा–मुवानावाले, श्री सज्जन राज/मंजुबाई जैन–नोएडा, श्री महेन्द्रजी अग्रवाल–दिल्ली, श्री पवन रीटा जैन–दिल्ली, श्री धर्मपाल गोयल–फरीदाबाद, श्री नरपत दूगड़–दिल्ली, श्रीमती निर्मला पूगलिया–दिल्ली, श्री कांति कुमार पारख–दिल्ली, श्री सुभाष तिवारी–दिल्ली, श्री तारा चन्द्र पटावरी–दिल्ली, श्री आर.के. जैन–दिल्ली, श्री ताराचन्द जी भोगल–दिल्ली ,श्री विजय मेहता–दिल्ली, श्रीमती स्वराज एरन–पंजाब, श्री विमलजी वकील–पंजाब, श्रीसोहन लाल जैन सुनाम, श्री देवराज वकील–हिसार, श्री पतराम राजलीवाल–हिसार, श्री घनश्याम जी–हिसार, श्री राधेश्यामजी–हिसार, श्री केशोरामजी–हिसार, श्री सुशील जैन–हनुमानगढ़–राज.श्री चन्द्रप्रकाश सुनाम, श्री महावीर प्रसाद जैन धुरीवाले–पंजाब, श्रीमती पुष्पा जैन (धर्मपत्नी स्वर्गीय जे.पी. जैन) दिल्ली, श्री सीताराम जैन–दिल्ली, श्री कुलभूषण–दिल्ली, श्री नौरतनमल दफ़्तरी–दिल्ली, श्री प्रेमलता जैन–दिल्ली, श्रीमती पल्लवी सेठिया–कोलकाता, श्री श्याम लाल सातरोदिया–दिल्ली, श्री विनोद गुप्ता–दिल्ली, श्री एन.पी. मित्तल–नोएडा, श्री एम.पी. जैन–दिल्ली, श्री जितेन्द्र/विजेन्द्र जोशी–दिल्ली , श्रीमती मंगली आई बुच्चा–सुरत, श्री जतनलाल संदीप बरड़िया–बेंगलोर, श्री सतीश जैन पत्रकार आदि ने उदारता से अपने अनुदान की घोषणएं की। समारोह में युवा कलाकार श्रीमती भारती चोरड़िया, श्री बसंत मोहता, श्री कुमार निर्मल तथा आलोक डागा ने भी भजन प्रस्तुत किए। भक्ति–संगीत के इस चिर–स्मरणीय समारोह का प्रमुख श्रेय युवा कार्यकर्ता श्री बसंत सिंघी को दिया जाना चाहिए।

इस अवसर पर आचार्यश्री मानमलजी तथा युवा मुनि सुयशप्रभ सागर जी की मंगलमय उपस्थिति रही। साध्वी चांद कुमारी जी ने सरलमना साध्वीमंजुश्री जी की ओर से सालापर्ण द्वारा अपनी मंगल कामनाओं की प्रस्तुति दी। पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी के मार्गदर्शन में साध्वी कनकलता जी, साध्वी समताश्री जी, साध्वी बसुमती, साध्वी पदम्श्री जी ने कार्यक्रम को सफल बनामें पूरा श्रम–सहयोग किया।

संस्था के समर्पित कार्यकर्ता श्री अरूण किरण तिवारी, श्री शैलेन्द्र झा, श्री सतीश जैन पत्रकार, श्री सुजीत कुमार झा, श्री आनन्द जैन, श्री विकास जैन, श्री सोहनवीर सिंह, श्री जसवीर सिंह, श्री दिलीप तिवारी, श्री प्रदीप कुमार, श्री रंजीत सिंह, श्री भूषण सिंह, कुमारी पुजा, आदि के अथक प्रयासों से समारोह में चार–चांद लग गए। रजत–महोत्सव के अनुरूप गौरवपूर्ण समारोह की गूंज पूरे महानगर में रही। समारोह का दूसरा चरण फरवरी में हिसार मानव मंदिर में रहेगा।

-बेंगलोर में World Council of religious leaders द्वारा आयोजित सर्व-धर्म सभा को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्यश्री। साथ में हैं संस्था के अध्यक्ष श्री बी.के. मोदी तथा भानुपुरा पीठ के शंकराचार्य स्वामी दिव्यानन्द तीर्थ।

-श्री कृष्णगिरि तीर्थ, तमिलनाडु-कर्नाटक में पूज्यवर के साथ श्री बसंत गुरुजी, श्री सुभाषजी तिवारी, श्री मनोहर भारतीय, श्री माणक सिंघी तथा सौरभ जैन।

-मानव मंदिर मिशन के रजत-जयंती-वर्ष महोत्सव पर विशाल जन समुदाय के बीच अपना उद्‌बोधन-प्रवचन करते हुए पूज्य आचार्यश्री। साथ में हैं आचार्य श्री मानमल जी, श्री सुयश मुनि जी तथा मुनि-जन।

-उपस्थित जन मेदिनी की एक झलक।

-समारोह के प्रमुख अतिथि, भारत सरकार के वित्त राज्य मंत्री श्री पवन कुमार बंसल मिशन के प्रतिनिधियों के साथ।

-हारमोनियम पर गुरु-महिमा का गान करते हुए साधक सौरभ जैन।

-अन्तर्राष्ट्रीय कलाकार श्री राजेन्द्र जैन के मधुर गीतों ने विभिन्न क्षेत्रों से समागत मिशन-प्रतिनिधियों का मन मोह लिया।

-श्री राजेन्द्र जैन के साथ अन्य कलाकार हैं- श्रीमती भारती चोरड़िया, श्री बसंत मोहता, श्री कुमार निर्मल तथा श्री आलोक डागा।

-पूज्य गुरुदेव के साथ कलाकार श्री राजेन्द्र जैन तथा मिशन के कार्यकर्ता-गण।

-मानव मंदिर गुरुकुल के बालक-बालिकाएं समूह-गीत प्रस्तुत करते हुए।

-जैन आश्रम ध्यान मंदिर की चित्र-दीर्घा (Photo Gallary) का लोकार्पण करते हुए केंद्रीय मंत्री श्री पवन कुमार बंसल जी, श्री राजेन्द्र जैन श्रीमती निर्मला पुगलिया, श्री अरुण तिवारी, श्री विकास जैन आदि।

-दीप-प्रज्ज्वलन करते हुए श्रीमती मंजुबाई जैन तथा श्रीमती स्वराज एरन सुनाम।

-मंच पर आसीन हैं साध्वी समुदाय

झंडा रोहण करते हुए श्री मुकेश जैन तथा धर्मपाल गोयल आदि।

-समाज सेवी एवं उद्योगपति श्री मनोहर लाल अग्रवाल का माल्यार्पण से सम्मान करते हुए श्री शैलेन्द्र झा 'सी.ए.'।

-श्री नवल सिंह के प्रतिनिधि श्री हरप्रीत सिंह का सम्मान करते हुए श्री रामनिवास जैन।

-केंद्रीय राज्य मंत्री श्री पवन कुमार बंसल का माल्यार्पण से सम्मान करते हुए युवा नेता श्री सुखराज सेठिया।

-सिद्धाचलम न्यूजर्सी के आजीवन ट्रष्टी श्री माधव प्रसाद जैन का सम्मान करते हुए मिशन के ट्रष्टी श्री ओमप्रकाश जैन।

-केंद्रीय राज्य मंत्री श्री पवन बंसल मानव मंदिर के प्रति मंगल भावना प्रगट करते हुए। मंच पर आसीन हैं पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री मानमल जी, श्री सुयश मुनि जी आदि

-मम्मी सम्बोधन से लोकप्रिय श्रीमती ताजदार बाबर, वरिष्ठ विधायिका का समान करते हुए श्रीमती रीटा जैन।